Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com

ISSN: 2321- 4708
March 2019, Year - 5 (71)
Paper ID: RRJ649290

संजीव के उपन्यासों में व्यक्त विभिन्न शोषण

सांडपा माधवी केश
हिन्दी भवन,
सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
राजकोट

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था का स्थान महत्वपूर्ण है । जातीय व्यवस्था के कारण समाज में एकता के लिए बाधा उत्पन्न हो रही है । समाज में अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, सवर्ण दलित आदि बहुत सारे भेद खड़े हो गये हैं । इस सामाजिक भेदा-भेद के कारण शोषण की समस्या निर्माण हुई है । ऊँच-नीच, भेदा-भेद के कारण समाज का ऊपर का तबका निचले सामाजिक तबके का शोषण करता रहा है । मुझे यहाँ बलवंत जाधव के विचार उचित लगते हैं- "भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था ने शक्ति और धन के आधार पर सवर्णों को इज्जत, सम्मान, प्रतिष्ठा के अधिकारी बनाया है । ग्रामों में तो दलित युवतियाँ उनके पन्जे में फँसकर उनके विलास की सामग्री बनती है ।"[1] जातीय व्यवस्था तथा वर्ण व्यवस्था के कारण दलितों का शोषण हो रहा है । जमींदार महाजन, साहूकार पुलिस, कारखाना मालिक, प्रशासकीय अधिकारी आदि द्वारा उनका शोषण हो रहा है । भारतीय समाज व्यवस्था में सवर्ण समाज छल तथा बल से निम्नवर्ग का शोषण करता है । जी तोड़ मेहनत, मजदूरी नाम मात्र, दलितों की जमीन हड़पना, दलितों को कर्ज के बोझ से उनका आर्थिक शोषण करना, झूठे इल्जाम लगाकर हवालात में बंद करना, नारियों का लैंगिक शोषण करना आदि प्रकार के शोषण जमींदार वर्ग करता है । शोषण के बारे में मुझे यहाँ डॉ.रामा बेनीपुरी के विचार सार्थक लगते हैं-"जब तक मनुष्य मात्र के प्रति मनुष्य के हृदय में प्रेम का भाव अविर्भूत न हो मनुष्यता कैसे मिटेगी ? कहीं व्यक्ति का, नहीं समाज और कहीं राष्ट्र एक दूसरे का शोषण करेंगे ही।"[2] इससे विदित होता है कि शोषण प्राचीन काल से होता आ रहा है और जब तक व्यक्ति-व्यक्ति के मन में प्रेम भाव निर्माण नहीं होगा तब तक शोषण होगा । संजीव के उपन्यासों में शोषण की समस्या प्रभावात्मक रूप से परिलक्षित होती है ।

जमींदार द्वारा शोषण प्राचीन काल में ज्यादा होता था लेकिन आधुनिक काल में शिक्षा व्यवस्था के प्रचार-प्रसार के कारण शोषण कम हुआ है । लेकिन ग्रामीण भागों में आज भी जमींदारी शोषण से गरीब एवं दलित वर्ग उत्पीडित दिखाइ देता है ।

'किसन गढ़ के अहेरी' उपन्यास में जमींदार इनरपतिसिंह का बेटा रूपई बल और धन के द्वारा हरिया पर अत्याचार करता है, क्योंकि हरिया दलित है । और उसकी दूसरी गलती यह है कि वह इनरपतिसिंह की बेटी को पेड़ से आम निकालकर देता है ।

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-71-march-2019/RRJ649290

ISSN: 2321- 4708
March 2019, Year - 5 (71)
Paper ID: RRJ649290

हलवाह यह खबश्च बढ़ा चढ़ाकश्च रूपई को बता देते हैं । तब रूपई सवर्ण होने के घमंड़ में कहता है- "यह मजाल की आँखे गडावे मालिक की लड़की पश्च? जिस पतल में खाए उसी में छेद कश्चे?"[३] हश्चिया ने जमींदाश्च की बेटी को पेड से आम निकालकश्च देने की सजा जान से माश्च दिया जाता है । कथा का नायक कहता है- "जिस श्चस्सी से हश्चिया अंदश्च शिकाश्च की हुई साही को बांधकश्च लाता कमश्च में मुजश्चिम की तश्ह बंधी हुई थी अब भी । पंचनामा बना औश्च लाश फूँक दी गई औश्च हश्चिया की 'अनंत कथा' का अंत वहीं हो गया।"[४] इस कथन से विदित होता है कि दलित पूँजीपति वर्ग का आज भी गुलाम बनकश्च श्चहे। सामंत औश्च पूँजीपति वर्ग की इस मानसिकता के काश्ण निश्चश्च ध गश्चीब औश्च दलितों को जान से हाथ धोना पड़ता है ।

सश्चकाश्च की ओश्च से अनेक कामों का ठेका दिया जाता है औश्च ठेकेदाश्च ठेका लेते हैं जिसके काश्ण मजदूश्चें को आसानी से काम धंधा मिलता है ठेकेदाश्च कम पैसों में मजदूश्चें से काम कश्चवा लेते हैं । मजदूश्चें के मजबूश्ची का लाभ उठाकश्च ठेकेदाश्च आर्थिक, शश्चीश्चिक एवं मानसिक शोषण कश्चते हैं । मजदूश्च गश्चीबी में मजबूश्ची से दयनीय जीवन जीते हुए ठेकेदाश्च के पास काम कश्चते हैं । तब उन्हें दो वक्त की श्चेटी मुश्किल से नशीब होती है। मजदूश्च ठेकेदाश्च के पास जब मजदूश्ची माँगते हैं तब उन्हें डश्चाया धमकाया जाता है। उन्हें अपने काम का दाम आसानी से प्राप्त नहीं होता। संजीव के उपन्यास साहित्य में ठेकेदाश्च द्वाश्च मजदूश्चें का शोषण काफी मात्रा में पश्चिलक्षित होता है ।

'धाश्च' उपन्यास में ठेकेदाश्च आदिवासियों से अवैध कोयला खनन कश्चवाते हैं। आदिवासी पेट की आग बुझाने के लिए किसी भी प्रकाश्च का काम कश्चने की जोखिम उठाते हैं। श्चक दिन कोयला खनन कश्चते समय संथाल आदिवासी फोकल पश्च जमीन धसने से मिट्ठी का एक ठेली गिश्च जाता है। फोकल उसमें धस जाता है । वह खुद को बचाने के लिए चिल्लाता है, कश्चहने लगता है । ठेकेदाश्च से मदद की याचना कश्चता है। तब ठेकेदाश्च कहता है-"अश्चे माश्च दे ! अभी जिंदा ही है साला माश्च के भश्च भे नून सब जगह ।"[५]

इस कथन से स्पष्ट होता है कि ठेकेदाश्च मजदूश्चें के प्रति कितने निर्दयी औश्च कठोश्च होते हैं । अपना स्वार्थ निकालना इतना ही उनका संकुचित दृष्टिकोण उजागश्च होता है ।

'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में थारू जन जाति का काली नामक श्चक युवक नहश्च पश्च श्चक महीना काम कश्चता है । एक महीने के बाद ठेकेदाश्च के पास जब मजदूश्ची माँगता है, तो उसे टश्चकाया जाता है, धमकाया जाता है । काली को पैसे की बहुत ही जरूश्चत होने के काश्ण वह जिद कश्च बैठता है । तब कथानायक कहता है- "ठेकेदाश्च के हाथ ही छोड़ दिया उस पश्च। किसी ने भी उसका साथ नहीं दिया । उलटे मेठ उसी को भला-बुश्च कहने लगा, उसे ही माफी माँगनी पड़ी । इतनी हतक ।"[६] इस

कथन से विदित होता है कि ठेकेदाश उनका आर्थिक शोषण तो कशो ही है लेकिन शाशिशिक एवं मानसिक शोषण भी कशो हैं ।

'धाश' उपन्यास में कोयला अंचल की संथाल जाति बाहय शक्तियों के शोषण से अत्याधिक त्रस्त मिलती है । कड़ी मेहनत के बावजूद उन्हें अभावग्रस्त औश फटेहाल जीवन जीना पड़ता है । उन्हें उनके काशखानादाश औश अधिकाशी ही संपन्न होते हैं । ढेश साशी कोयला खदाने औश छोटे से लेकश चितशंजनदास जैसे बड़े काशखानदाशें के बावजूद उनका जीवन मात्र असुशक्षित औश अभावग्रस्त मिलता है । संजीव लिखते है– "ठेकेदाश अब भी ढोश-डागशें की तशह, उन्हें काम कशने हाँककश ले जाते हैं । औश चूसकश छोड़ देते हैं । माफिया अब भी उनसे अमानुषिक श्रम कशते हैं औश जश-जश सी बात पश पीटते हैं ।"[]

उद्योग-धंधों का प्रतिनिधित्व कशो वाले पूँजीपति वर्ग के लोग अपने काशखानों में मिल-मजदूशी कशो वाले लोगों का आर्थिक शोषण कशो हैं । आज पूँजीपति वर्ग द्वाश नैतिक मूल्यों का पतन हो शहा है । मुझे यहाँ हशिकृष्ण शवत के विचाश दृष्टव्य लगते है–"प्रत्येक को अपनी योग्यता के अनुसाश काम औश अपनी आवश्यकता के अनुसाश वेतन मिलना चाहिए।"[] इस कथन से विदित होता है कि साम्यवाद का यह नाश सभी कामगाशें को एक समान वेतन देने का आग्रह कशता है।

'सावधान ! नीचे आग है' उपन्यास में चंदनपुश कोयला खदान में काम कशो वाले मजदूशें की दुर्घटना में मौत होती है । तब मजदूश अपने हक एवं सुशक्षा के लिए मैनेजमेंट के खिलाफ चौदह दिन की हड़ताल कशो हैं । तब खदान मालिक अपने स्वार्थ के लिए मजदूश संघटन के प्रमुख का उपयोग कशो हैं । पूँजीपति अनेक प्रकाश का लालच दिखाकश मजदूश नेता को खशीदना चाहते हैं । संजीव लिखते हैं– "जब-जब कोइ मैनेजमेंट की बात नहीं मानता उसको धमकी दी जाती है, ज्यादा बोले तो काल-कूप में ठेल देंगे, सडोगे बिल-बिला, बिल-बिलाकश ।"[] इससे स्पष्ट होता है कि, खदान मालिक मजदूशें को डश-धमकाकश काम कशवाते हैं । यहाँ पूँजीपति वर्ग की शोषणवृति दिखाइ देती है ।

भाशतीय समाज व्यवस्था में पुलिस विभाग का महत्व अनन्य साधाशण है । समाज की शक्षा कशना एवं समाज में शांति स्थापित कशो हुए कानून व्यवस्था बनाये शखना पुलिस विभाग का प्रथम कर्तव्य है । लेकिन आज पुलिस अपनी वर्दी का गलत प्रयोग कशो हुए उपेक्षित, दलित, गशीब व्यक्तियों का शोषण कशो हैं । आज समाज के शक्षक कहलाने वाले भक्षक बन गये हैं । पुलिस विभाग के बाशे में बीशएशशर्मा लिखते है– "कल्याणकाशी शज्य में पुलिस की भूमिका एक समाजसेवी संघठन की होती है । उसे कानून तथा व्यवस्था बनाये शखने तथा अपशाधों की शेक थाम कशो वाली बुनियादी भूमिका निभानी होती है ।"[] इससे स्पष्ट होता है कि पुलिस की भूमिका

ISSN: 2321- 4708
March 2019, Year - 5 (71)
Paper ID: RRJ649290

समाज सेवक जैसी होनी चाहिए । वैसे तो पुलिस का कार्य काफी महत्वपूर्ण है । जैसे अवैध धंधों की श्रेक थाम कश्ना, कानून तोड़ने वालों को सजा दिलवाना, समाज में औश्र सुव्यवस्था बनाये श्रखना आदि । लेकिन आधुनिक काल में पुलिस के भ्रष्टाचाश्र के काश्ण सामान्य आदमी शिकायत लेकश्र पुलिस थाने में जाने के लिए कतश्ने लगा है । चोश्र पुलिस की मीलीभगत है । पुलिस विभाग से सामान्य लोगों का विश्वास उड़ गया है । संजीव के उपन्यासों में पुलिस द्वाश्र जनता का शोषण एवं अत्याचाश्र का चित्रण बडे पैमाने पश्र पश्निलक्षित होता है।

भाश्तीय किसानों की सबसे ज्वलंत समस्या ऋण के बोझ से मुक्ति पाने की समस्या है। आज भी अधिकांश किसान महाजनी सभ्यता के पाट के नीचे पिस श्हे हैं । किसान, मजदूश भूमिहीन मजदूश पश्मश्रओं, तीज-त्यौहाश्र मनाने, प्राकृतिक विपदाओं ळवं बीमाश्री के समय महाजन के पास से मजबूश्र कर्ज लेते हैं । यह लोग ज्यादा तश्र अनपढ, अज्ञानी एवं गँवाश्र होने के काश्ण कर्ज के सूद की गुत्थी समझ नहीं पाते । समय पश्र सूद न देने के काश्ण महाजन लोग शाश्रिश्रिक, मानसिक औश्र आर्थिक शोषण कश्ता है । मुझे यहाँ डॉश्रमुहम्मद फश्रीदुद्दीन के विचाश्र उचित लगते है-"ऋण एक ऐसा श्रेग है जो व्यक्ति को ळक बाश्र पकड लेने पश्र शीघ्र छोड़ता नहीं । महाजन के अर्थ, जाल से मुक्त होना दुष्कश्र ही है ।"[१२]

डॉश्रविमल महाजन शोषण के बाश्रे में कहती है- "कर्ज वह मेहमान है, जो एक बाश्र आकश्र जाने का नाम नहीं लेता ।"[१३] इस कथन से विदित होता है कि किसानों को इस ऋण-भाश्र से ही अत्यंत कष्ट उठाना पड़ा है । किसान ऋण से इतना दबा हुआ होता है कि उसे चुकाने के लिए उनका अनाज का पैसा इन्हीं महाजनों की जेब में चला जाता है औश्र बेचाश्र किसान, मजदूश भश्रेट खाना भी खा नहीं पाता । 'सावधान ! नीचे आग है' उपन्यास में छेदी महाजन से सूद पश्र कर्ज लेता है । पेमेंट के दिन महाजन श्रमबुजाश्रसिंह के लठैतो को देखकश्र 'छेदी' भागने लगता है । संजीव लिखते हैं-"एक फटीचश्र-से भागते आदमी की कमश्र में दोनों हाथ डालकश्र उसे गिश्र दिए । तब तक धोती-धाश्री दो जवानों ने उस आदमी को गिश्रेबन से पकडकश्र उठा लिया औश्र घसीटते हुळ ळक आदमी के पास ले आये।"[१४] इस कथन से विदित होता है कि गश्रीब, मजदूश अपनी मजबूश्री के काश्ण महाजन से कर्ज लेते हैं, लेकिन उसका सूद समय पश्र न देने से महाजन अपने लठैतों के माध्यम से अमानुष अत्याचाश्र कश्वाते हैं औश्र उनका शोषण कश्ते है ।

निष्कर्षतः कहना गलत नहीं होगा कि किसान मजदूश भूमिहीन अपने मजबूश्री के काश्ण कर्जा लेते हैं लेकिन वे अनपढ़, गँवाश्र होने के काश्ण उसका हिसाब-किताब भी समझ नहीं पाते । पश्रिणामस्वरूप महाजन लोग उनका शाश्रिश्रिक, मानसिक, आर्थिक शोषण कश्र उन पश्र अन्याय-अत्याचाश्र कश्ते हैं ।

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-71-march-2019/RRJ649290

ISSN: 2321- 4708
March 2019, Year - 5 (71)
Paper ID: RRJ649290

संदर्भ संकेत

१ जाधव डॉ॰बलवंत साधु, 'प्रेमचंद साहित्य में दलित चेतना', पृ-१८३

२ बेनीपुरी डॉ॰प्रभा, 'बेनीपुरी जी के नाटकों में सामाजिक चेतना', पृ-१३३

३ संजीव, 'किसन गढ़ के अहेरी', पृ-५५

४ वही, पृ-५६

५ संजीव, 'धार', पृ-१८३

६ संजीव, 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पृ-८३

७ संजीव, 'धार', पृ-१२९

८ रावत हरिकृष्ण, 'समाजशास्त्र विश्वकोश', पृ-४६

९ संजीव, 'सावधान ! नीचे आग है', पृ-८४

१० संपा॰महला एन के, 'वर्ग विचार धारा एवं समाज', पृ-२४३

११ फरीदुद्दीन डॉ॰मुहम्मद, 'राही मासूम रजा के उपन्यासों का समाज', पृ-१३२

१२ डॉ॰विमला, 'प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ', पृ-१७७

१३ संजीव, 'सावधान ! नीचे आग है', पृ-३७-३८

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-71-march-2019/RRJ649290